# इकाई 8 सामाजिक विज्ञानों की भाषा (राजनीति विज्ञान) तथा शब्द रचना

**इकाई की रूपरेखा**


8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 भारतीय लोकतंत्र

- 8.2.1 राजनीतिक समानता
- 8.2.2 आर्थिक समानता
- 8.2.3 धर्मनिरपेक्षता

8.3 पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग

- 8.3.1 विषय का सरल विवेचन

8.4 व्याकरणिक विवेचन

- 8.4.1 "वि" उपसर्ग
- 8.4.2 विलोम शब्द
- 8.4.3 संधि
- 8.4.4 समास

8.5 सारांश

8.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर


## 8.0 उद्देश्य

राजनीति विज्ञान विषयक पाठ पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य हिंदी में इस विषय के लेखन से आपको परिचित कराना है। इससे आप राजनीति विज्ञान विषयक लेखन में भाषा की प्रकृति की पहचान कर सकेंगे।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सामाजिक विज्ञानों, विशेषकर राजनीति विज्ञान से संबंधित किसी अंश को पढ़कर उसका तात्पर्य ग्रहण कर सकेंगे;
- यह सीखेंगे कि सामाजिक विज्ञान से संबंधित विषयों को सरल भाषा में कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है;
- पारिभाषिक शब्दों को पहचान सकेंगे और राजनीति विज्ञान में पारिभाषिक शब्द का महत्व समझ सकेंगे;
- स्वयं विषय का विवेचन कर सकेंगे, जिससे आप समान प्रसंगों में सही ढंग से अपने को अभिव्यक्त भी कर सकेंगे;
- उपसर्ग, विलोम, संधि और समास के अर्थ और नियमों को समझेंगे और उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।

## 8.1 प्रस्तावना

आपने खंड.1 की इकाई 6 में श्रीमती इन्दिरा गांधी का व्याख्यान "भारत की ज़िम्मेदारी हम सब पर है" का अध्ययन किया है। उस पाठ में आपने जाना था कि भारत की प्रगति के लिए भारतवासियों के कर्तव्य क्या-क्या हैं। आपने खंड-2 की इकाई 7 में स्वतंत्रता संग्राम की कहानी का अध्ययन भी किया है। इस इकाई में आपको स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी मिली होगी। उपर्युक्त इकाइयों से आप समझ गये होंगे कि भारत की स्वतंत्रता के लिए कितना त्याग और संघर्ष करना पड़ा था। इस संघर्ष के दौरान दीर्घकालीन विचारमंथन भी चलता रहा और यह सोचा जाता रहा कि आज़ाद भारत में किस तरह की व्यवस्था हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो संविधान बनाया गया वह इसी विचार-मंथन की स्वाभाविक परिणति थी। संविधान में भारत को लोकतांत्रिक गणराज्य का स्वरूप दिया गया, जिससे कि सभी भारतवासियों को बिना किसी भेदभाव के प्रगति करने का समान अवसर उपलब्ध हो सके। भारतीय लोकतंत्र की क्या विशेषताएँ हैं और उसके सम्मुख कौन-सी चुनौतियाँ हैं, यही इस पाठ का विषय है।

यह पाठ 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' की पाठ्य पुस्तक 'नागरिक शासन' से लिया गया है। इसके लेखक सुदिप्त कविराज हैं।

पाठ का यह विषय राजनीति विज्ञान से संबंधित है। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इस पाठ में भी इस तरह के कई शब्द हैं, जिनकी व्याख्या सरल शब्दों में स्वयं लेखक ने पाठ में कर दी है। यह पाठ इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इसमें लेखक ने विषय का अत्यंत सरल भाषा में विवेचन किया है।

इस इकाई में हमने उपसर्ग, विलोम, संधि और समास का भी परिचय दिया है। इनसे आपका भाषा ज्ञान बढ़ेगा, ऐसी आशा है।

## 8.2 भारतीय लोकतंत्र

1. हमारी शासन प्रणाली लोकतांत्रिक है। लोकतंत्र का सर्वोत्तम अर्थ होता है नागरिकों की समानता, या दूसरे शब्दों में असमानता का अंत। संसार में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना से पूर्व अधिकतर समाज असमान राजनीतिक अधिकारों पर आधारित थे। केवल भारतीय समाज में ही राजनीतिक असमानता नहीं थी। यूरोप में अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी तक धीरे-धीरे लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे संविधान ने लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की। लोकतंत्र एक उत्तम आदर्श है। परंतु इसे प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है। हमारे जैसे समाज में, जहाँ अनेक विषमताएँ हैं, इस आदर्श की प्राप्ति और भी कठिन है। इन विषमताओं से समाज में ऐसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जो राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में बाधा प्रस्तुत करती हैं। ये सभी समस्याएँ अर्थात् जाति तथा वर्गों की असमानता, धार्मिक और भाषायी समुदायों में संघर्ष इत्यादि लोकतांत्रिक सरकार के संचालन को कठिन बना देते हैं। अतः इन्हें प्रायः भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ कहा जाता है। यदि भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ होना है तो हमें इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करना होगा।

2. लोकतंत्र में दो महत्वपूर्ण विचार सामने आते हैं। ये हैं स्वतंत्रता तथा समानता के विचार। लोकतंत्र वह शासन प्रणाली है, जो कि लोगों को स्वतंत्रता प्रदान करती है। कुछ सीमाओं में रहते हुए वे जो चाहें कर सकते हैं। उनके पास ऐसे अधिकार होते हैं, जिन्हें सरकार भी छीन नहीं सकती। परंतु ये सब भी समानता से संबंधित हैं। लोग स्वतंत्रता का वास्तविक उपयोग तभी कर सकते हैं जबकि वे समान हों। अतः स्वतंत्रता और समानता के विचार एक-दूसरे से संबद्ध हैं।

### 8.2.1 राजनीतिक समानता

3 समानता के भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विषमता या असमानता कई प्रकार की होती है। निःसंदेह पहली तो राजनीतिक समानता है। इसका अर्थ हुआ कि लोकतांत्रिक देशों में प्रत्येक व्यक्ति को समान राजनीतिक अधिकार उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए दो व्यक्तियों में से एक अमीर हो सकता है और दूसरा गरीब। राजनीतिक समानता का अभिप्राय होगा कि आर्थिक असमानता के बावजूद दोनों व्यक्तियों को एक-एक वोट देने का अधिकार होगा। निर्वाचन के समय सभी मतदाता समान अधिकार का उपयोग करते हैं। इसलिए लोकतंत्र को "एक व्यक्ति एक वोट" के सिद्धांत पर आधारित शासन कहा जाता है।

### 8.2.2 आर्थिक समानता

4. लोकतंत्र का अर्थ केवल राजनीतिक समानता नहीं होता है। हमारे संविधान के अनुसार राज्य के अनेक उद्देश्य या लक्ष्य हैं। ये लक्ष्य हैं - स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा लोकतंत्र। ये सभी लक्ष्य एक-दूसरे से संबंधित हैं। हम पहले यह देखेंगे कि ये किस प्रकार संबंधित हैं। राजनीतिक समानता केवल सरकार तथा अधिकारों के उपयोग से संबंधित है। पर अब लोकतंत्र का अर्थ बहुत विस्तृत हो गया है। कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं कि लोकतंत्र और समानता के सिद्धांत को जीवन के अन्य क्षेत्रों में क्यों न अपनाया जाए। केवल राजनीति ही हमारे जीवन का एकमात्र महत्वपूर्ण पक्ष नहीं है। हम कितना धन अर्जित करते हैं, उसको किस प्रकार व्यय करते हैं, अर्थात् हमारा आर्थिक जीवन भी अधिक नहीं तो उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि राजनीतिक जीवन है। क्या हमें उस क्षेत्र में भी समानता चाहिए या नहीं? यह कहा जाता है कि केवल मताधिकार ही पर्याप्त नहीं है। यदि कुछ लोग बहुत धनवान हैं तथा अन्य बहुत से लोग गरीबी में रहते हैं तो इस प्रकार का समाज बुरा है। उसमें सुधार होना ही चाहिए। मनुष्यों को केवल राजनीति में ही नहीं बल्कि आर्थिक जीवन में भी समान होना चाहिए। जिन वस्तुओं को धन खरीद सकता है उसका उपयोग करने का अवसर सबको मिलना चाहिए। इस स्थिति को आर्थिक समानता या समाजवाद कहते हैं। समाजवाद के अभाव में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता क्योंकि लोकतंत्र का मूल विचार ही समानता है। समाजवाद केवल लोगों के राजनीतिक जीवन में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी समानता की धारणा का विस्तार करता है।

### 8.2.3 धर्मनिरपेक्षता

5. हमारे संविधान में धर्मनिरपेक्षता नामक एक और लक्ष्य की बात भी कही गई है। लोकतंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सरकार सभी नागरिकों के साथ एक-समान व्यवहार करे, चाहे उसका धर्म कोई भी हो। इसी को धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत कहते हैं। हम भारतवासियों में संसार के लगभग सभी धर्मों को मानने वाले मिलते हैं। हमारे देश में हिंदू, इस्लाम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा पारसी धर्मों में विश्वास रखने वाले लोग निवास करते हैं। परंतु धर्म प्रत्येक व्यक्ति का निजी मामला होता है। राजनीति में धर्म का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि चाहे कोई व्यक्ति हिंदू हो, मुसलमान हो या किसी अन्य धर्म में विश्वास रखता हो, सरकार की दृष्टि में सब समान हैं - वे सब भारत के नागरिक हैं। हमारे संविधान ने भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया है। इसके दो अर्थ होते हैं। प्रथम, इसका अर्थ हुआ कि सरकार के लिए सभी धर्मों के नागरिक समान हैं। दूसरे शब्दों में धर्म को राजनीतिक जीवन से पृथक् रखना चाहिए। द्वितीय, धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह भी है कि सभी धर्मों के लोगों को अपने धर्म के अनुसार पूजा-अर्चना करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

6. लोकतंत्र, समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता बहुत अच्छे आदर्श हैं। इस विचार से कोई भी असहमत नहीं होगा। परंतु इतिहास हमें विचित्र पाठ पढ़ाता है। हमें ज्ञात होता है इन आदर्शों को भी बिना कठिनाई के प्राप्त नहीं किया जा सका। हम एक सीधा-सा उदाहरण लेते हैं। राजनीतिक समानता की माँग है कि किसी भी राष्ट्र को किसी अन्य देश पर शासन नहीं करना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र को अपना प्रबंध स्वयं करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। फिर भी

करते थे और उन्होंने भारत को अपना उपनिवेश बना लिया था। भारत ही नहीं एशिया के अधिकतर देश औपनिवेशिक शासन के अधीन थे। कुछ समय पहले तक दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति के अनुसार शासन होता रहा। इस व्यवस्था में यद्यपि देश में काले वर्ण के लोग बहुमत में होते हुए भी भी श्वेत वर्ण के अल्पसंख्यकों के हाथों में समस्त सत्ता थी। इस उदाहरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो उचित है आवश्यक नहीं कि वह बिना कठिनाई के उपलब्ध हो जाए। ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता उचित और न्यायसंगत थी, परंतु वास्तव में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए एक दीर्घकालीन और शक्तिशाली स्वतंत्रता आंदोलन को चलाना पड़ा था। इसी प्रकार अन्य अनेक न्यायसंगत चीज़ें होती हैं, परंतु उनकी उपलब्धि संभव नहीं होती। अब हम देखेंगे कि लोकतांत्रिक और न्यायसंगत समाज की स्थापना के मार्ग में हमारे देश में कौन-सी बाधाएँ हैं।

7. हमने देखा है कि लोकतंत्र का अर्थ नागरिकों की समानता होता है। अतः सभी प्रकार की विषमताएँ लोकतांत्रिक समाज के लिए अभिशाप हैं। लोकतंत्र में समाज के संचालन में सभी की समान भागीदारी होनी चाहिए। प्रत्येक प्रकार की विषमता इसके मार्ग में बाधक सिद्ध होती है। हमारे समाज में लोकतंत्र के समक्ष कई प्रकार की चुनौतियाँ हैं। परंतु इससे आप यह न समझें कि हमारे समाज में या हमारी जनता में कोई बुराई है। आप यह न समझें कि हम अपनी लोकतांत्रिक सरकार चला ही नहीं सकते हैं। यूरोप के देशों में लोकतंत्र की स्थापना में लगभग दो सौ वर्ष लग गयें थे। इन देशों ने जो कुछ दो सौ वर्षों में प्राप्त किया वह हम बहुत थोड़े समय में प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

8. हमारा समाज विषमताओं से भरपूर है। विषमताएँ इतनी भिन्न.भिन्न प्रकार की हैं कि उनकी गणना कर सकना भी संभव नहीं है। ये वे असमानताएँ हैं, जो विशेषकर लोकतंत्र के मार्ग में बाधक हैं। भारतवासी भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं। वे विभिन्न धर्मों में विश्वास रखते हैं। देश के विभिन्न प्रदेशों की भाँति-भाँति की संस्कृतियाँ हैं। हमारे सामाजिक जीवन में भी विषमताएँ हैं। धनवानों और निर्धनों के मध्य असमानता है। लोगों की आमदनी में बहुत अंतर है। जाति-प्रथा के आधार पर उच्च जातियों, निम्न जातियों तथा अछूतों के बीच बहुत अधिक विषमताएँ हैं। संवैधानिक कानूनी प्रावधानों के बावजूद हमारे लोकतांत्रिक देश में अछूतों को अलग बस्तियों में रहने पर बाध्य किया जाता है। उनके निम्न जाति होने को उनके पूर्वजन्म के कर्म के साथ जोड़कर अवैज्ञानिक रीति रूढ़ियों, परंपराओं के कारण उन पर अत्याचार किए जाते हैं। ऐसी स्थितियों को अछूत मानी गई जातियों को ही झेलना पड़ता है। अन्याय, अत्याचार का यह सिलसिला स्वर्ण मानी गई जातियों द्वारा आज भी निरंतर चल रहा है। पुरुषों और स्त्रियों के बीच असमानता है, महिलाओं को ऐसी समस्याओं का सामना करना पडता है जैसी पुरुषों के सम्मुख कभी नहीं आतीं। पढ़े-लिखे लोगों तथा निरक्षरों में विषमता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी विषमताओं के परिणामस्वरूप जिन वर्गों का शोषण होता है, उनका अपना कोई दोष नहीं होता। यह लोकतांत्रिक समाज का कर्तव्य हो जाता है कि जिनको कष्ट दिया जा रहा है उनका उद्धार करें। लोकतंत्र को सबसे बड़ा संकट इस प्रवृत्ति से उत्पन्न होता है कि कुछ लोग अपने धार्मिक संप्रदाय को अन्य संप्रदायों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार जाति, भाषा या क्षेत्र को लेकर भी तनाव उत्पन्न हो जाते हैं, जो लोकतंत्र के लिए हानिकर होते हैं। प्रत्येक समुदाय अन्य समुदाय से अधिक अधिकारों की अपेक्षा करता है। यह प्रवृत्ति निश्चय ही लोकतंत्र के विरुद्ध है।

**बोध प्रश्न**

आपने पाठ को ध्यान से पढ़ा होगा। नीचे कुछ स्वपरख अभ्यास दिये जा रहे हैं, इनका उत्तर देने का प्रयास कीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1. निम्नलिखित कथनों का पढ़कर बताइए कि वे सही हैं या गलत।

   i) भारत की शासन प्रणाली लोकतंत्र पर आधारित है। (सही/गलत)

   ii) लोकतंत्र की सफलता के लिए सिर्फ राजनीतिक समानता होना पर्याप्त है।

iii) धर्म पर आधारित राजनीति से ही लोकतंत्र को शक्ति मिलती है। (सही/गलत)

iv) धर्म प्रत्येक व्यक्ति का निजी मामला होता है। (सही/गलत)

v) 1947 से पूर्व भारत इंग्लैंड का उपनिवेश था। (सही/गलत)

2. नीचे दिये गये वाक्यों में सर्वाधिक सही एवं उपयुक्त शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) स्वतंत्रता और ..... के बिना लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती।
(एकता/समानता)

ii) "एक व्यक्ति एक वोट" के सिद्धांत पर आधारित शासन को ..... कहा जाता है। (लोकतंत्र/राजतंत्र)

iii) ..... समानता की स्थापना समाजवाद का लक्ष्य है।
(आर्थिक/राजनीतिक)

3. नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं। इन वाक्यों के अर्थ प्रकट करने वाले वाक्य भी उनके साथ दिए गये हैं। बताइए कि उनमें कौन-सा वाक्य सबसे सही अर्थ व्यक्त करता है।

क) लोग स्वतंत्रता का वास्तविक उपयोग तभी कर सकते हैं जबकि वे समान हों।

i) आर्थिक विषमता का बढ़ना लोकतंत्र की सफलता का सूचक है।

ii) गरीबी, जातिवाद, सांप्रदायिकता असमानता को बढ़ाते हैं, इससे लोकतंत्र कमज़ोर पड़ता है।

iii) लोकतंत्र का लक्ष्य स्वतंत्रता है, न कि समानता। [ ]

ख) धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह है कि सभी धर्मों के लोगों को अपने धर्म के अनुसार पूजा-अर्चना करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

i) धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्मों के प्रचार का दायित्व सरकार का होता है।

ii) अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की उपासना करने की स्वतंत्रता नागरिकों को प्रदान करने वाला राज्य धर्मनिरपेक्ष होता है।

iii) धर्मनिरपेक्ष राज्य में राज्य सत्ता धर्म की अनुगामिनी होती है। [ ]

4. नीचे दिये गये प्रश्नों का सही उत्तर छाँटकर उन्हें कोष्ठक में लिखिए।

क) लोकतंत्र के दो महत्वपूर्ण आधार बताइए।

i) एकता और उन्नति

ii) स्वतंत्रता और समानता

iii) बंधुत्व और धार्मिकता

iv) राष्ट्रीय प्रेम और सच्चरित्रता [ ]

ख) धर्मनिरपेक्ष राज्य में राजनीति और धर्म के संबंध का स्वरूप क्या होता है?

i) धर्म को राजनीति से अलग रखा जाता है।

ii) राजनीति सभी धर्मों का प्रचार करती है।

iii) राज्य धर्म का विरोध करता है।

iv) राजनीति धर्म का अनुगमन करती है। [ ]

ग) निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता "लोकतंत्र" पर लागू नहीं होती।

i) सभी धार्मिक समुदायों के प्रति समान व्यवहार

ii) अल्पसंख्यक जाति द्वारा बहुसंख्यक जातियों पर शासन

iii) आर्थिक वैषम्य समाप्त करना

iv) एक व्यक्ति एक वोट का अधिकार [ ]

5. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए।

i) भारतीय लोकतंत्र की कौन-सी चार प्रमुख विशेषताएँ हैं?

.....

.....

ii) भारतीय लोकतंत्र के समक्ष प्रस्तुत कौन-सी चार चुनौतियाँ हैं?

.....

.....

iii) रंगभेद पर आधारित शासन व्यवस्था का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

iv) धर्मनिरपेक्ष राज्य का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

v) जाति प्रथा से उद्‌भूत समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

## 8.3 पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग

यह पाठ राजनीति विज्ञान विषय से संबंधित है। प्रत्येक विषय की अपनी एक विशेष शब्दावली होती है जो किसी खास अर्थ में प्रयुक्त होती है। पारिभाषिक शब्दों के अर्थ सुनिश्चित होते हैं। इनकी अलग-अलग व्याख्या नहीं की जा सकती। इस पाठ के शीर्षक में प्रयुक्त "लोकतंत्र" एक पारिभाषिक शब्द है। लोकतंत्र का अर्थ "जनता द्वारा जनता के लिए जनता का शासन"। इस पाठ में इसके अतिरिक्त भी कई अन्य पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। हमने इकाई तीन में पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता के बारे में पढ़ा था। अगर हम पारिभाषिक शब्द का अर्थ जान लें तो उस शब्द के द्वारा व्यक्त विचार जान सकते हैं और विषय को समझ सकते हैं।

पारिभाषिक शब्द प्रायः विषय की किसी-न-किसी संकल्पना या धारणा के साथ जुड़े होते हैं। कई बार यह आशंका रहती है कि कहीं उनका दूसरा अर्थ न लगा लिया जाए। अतएव ऐसे शब्दों की व्याख्या विषय विवेचन के साथ ही लेखक स्वयं कर देता है। इस पाठ में भी लेखक ने प्रायः सभी पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या सरल ढंग से कर दी है। उदाहरण के लिए, "धर्मनिरपेक्षता" की परिभाषा को देख सकते हैं। लेखक के अनुसार, "धर्मनिरपेक्षता का

अर्थ है कि चाहे कोई व्यक्ति हिंदू हो, मुसलमान हो या किसी अन्य धर्म में विश्वास रखता हो, सरकार की दृष्टि में वे सब समान हैं"। लेखक ने परिभाषा के बाद भारतीय संदर्भ देकर इसकी स्पष्ट व्याख्या कर दी है। इससे पाठक उसका सही अर्थ जान सकता है।

**अभ्यास**

1. नीचे पाठ के आधार पर कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं, बताइए कि इनमें किन अवधारणाओं को परिभाषित किया गया है।

   i) एक ऐसी शासन प्रणाली, जो लोगों को स्वतंत्रता प्रदान करती है। कुछ सीमाओं में रहते हुए वे जो चाहें कर सकते हैं। ( )

   ii) एक ऐसी व्यवस्था जो आर्थिक समानता के लक्ष्य से प्रेरित हो। ( )

   iii) धर्म के आधार पर किसी तरह का भेदभाव न करने वाला राज्य। ( )

   iv) एक ऐसी शासन प्रणाली जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक समानता प्राप्त होती हैं अर्थात् जहाँ "एक व्यक्ति एक वोट" के सिद्धांत पर आधारित शासन होता है।

   ( )

   v) अपने धार्मिक संप्रदाय को अन्य संप्रदायों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास। ( )

   vi) वह राष्ट्र जो किसी अन्य राष्ट्र द्वारा परतंत्र या पराधीन बनाया गया है। ( )

किसी पाठ को समझने के लिए सिर्फ़ पारिभाषिक शब्दों का अर्थ जानना ही पर्याप्त नहीं है। लेखक पारिभाषिक शब्दों के साथ ऐसे पदों का प्रयोग भी करता है, जो पारिभाषिक शब्दों के अर्थ का विस्तार करते हैं, जैसे "लोकतांत्रिक व्यवस्था"। यहाँ "लोकतंत्र" नामक व्यवस्था की बात कही गयी है। व्यवस्था कई तरह की हो सकती हैं - सामंती व्यवस्था, पूँजीवादी व्यवस्था, समाजवादी व्यवस्था आदि।

2. नीचे कुछ पारिभाषिक पद दिये गये हैं - इनका अर्थ व्याख्या या विस्तार द्वारा स्पष्ट कीजिए।

| क्रम | पारिभाषिक पद | व्याख्या |
|---|---|---|
| i) | लोकतांत्रिक व्यवस्था | लोकतंत्र पर आधारित व्यवस्था |
| ii) | भाषाई समुदाय | ..... |
| iii) | भारतीय लोकतंत्र | ..... |
| iv) | औपनिवेशिक शासन | ..... |
| v) | आर्थिक समानता | ..... |

## 8.3.1 विषय का सरल विवेचन

यह पाठ तैयार करते हुए लेखक ने भाषा की सरलता और सुबोधता की ओर विशेष ध्यान दिया है ताकि विषय से अपरिचित विद्यार्थियों को भी सभी बातें सहज ही समझ में आ जाएँ। इसके लिए लेखक ने पारिभाषिक शब्दों की सरल व्याख्या तो दी ही है, वाक्य रचना में जटिलता से बचने का प्रयास किया है। छोटे वाक्यों के प्रयोग से यह पता लगता है कि लेखक के मन में विवेच्य विषय के संबंध में स्पष्ट जानकारी है। इस तरह के विषयों के लेखन में लेखक अपनी बात को पाठकों तक पहुँचाने के लिए जिन युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें यहाँ समझाया जा रहा है।

i) **व्याख्या** - लेखक अपनी बात स्पष्ट करने के लिए उसकी व्याख्या करता है। इसके लिए वह "दूसरे शब्दों में", "यानी", "अर्थात्", "कहने का तात्पर्य है" पदों या वाक्यांशों का प्रयोग करता है। जैसे इस पाठ में लेखक ने एक जगह लिखा है। "इसका अर्थ

हुआ कि सरकार के लिए सभी धर्मों के नागरिक समान हैं"। इस वाक्य में लेखक ने धर्मनिरपेक्षता का अर्थ समझाया है। अब लेखक इसे और स्पष्ट करने के लिए उक्त वाक्य के आगे एक और वाक्य जोड़ता है,"दूसरे शब्दों में धर्म को राजनीतिक जीवन से पृथक रखना चाहिए।" इस तरह यह वाक्य पहले वाक्य के कथन को और अधिक स्पष्ट करता है।

एक और उदाहरण लें : समाजवाद का अर्थ है आर्थिक समानता की स्थापना करना अर्थात् समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को समाप्त करने का प्रयास करना।

ii) **कथन को तर्क से सिद्ध करना** - ज्ञान-विज्ञान से संबंधित विषयों में लेखक को अपनी बात को कार्य-कारण श्रृंखला (तार्किक) के रूप में रखना होता है। अगर वह अपने कथन को विवेकपूर्ण ढंग से नहीं रखता तो वह अपने पाठकों को प्रभावित नहीं कर सकता। इसके लिए लेखक जो भी बात कहता है उसकी पुष्टि में प्रमाण भी प्रस्तुत करता है और इन दोनों को आपस में जोड़ने के लिए वह "अतः", "इसलिए", "क्योंकि" जैसे शब्दों का प्रयोग भी करता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को लें -

निर्वाचन के समय सभी मतदाता समान अधिकार का उपयोग करते हैं। इसलिए लोकतंत्र को "एक व्यक्ति एक वोट" के सिद्धांत पर आधारित शासन कहा जाता है।

उपर्युक्त वाक्य में लेखक ने लोकतंत्र की एक विशेषता "राजनीतिक समानता" को स्पष्ट किया है। इस विशेषता के अनुसार सभी को वोट देने का समान अधिकार प्राप्त है। यह "वोट देने का अधिकार", "राजनीतिक समानता" के तर्क को पुष्ट करता है। इसीलिए इन दोनों वाक्यों को "इसलिए" से जोड़ा गया है।

**अन्य उदाहरण :** समाजवाद के अभाव में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता है क्योंकि लोकतंत्र का मूल विचार ही समानता है।

iii) **उदाहरण प्रस्तुत करना** - लेखन के दौरान अपनी बात के समर्थन में लेखक उदाहरण भी प्रस्तुत करता है ताकि उसकी बात यथार्थपरक और सत्य मानी जाए। इसके लिए वह "उदाहरण के लिए", "मसलन", "जैसे" आदि शब्दों या वाक्यांशों के साथ अपनी बात कहता है। उदाहरण के लिए इस पाठ का पैरा 3 देखा जा सकता है। इस पैरा में "राजनीतिक समानता" की धारणा को परिभाषित करने के बाद लेखक अपनी बात के समर्थन में एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऐसा करने के लिए वह वाक्य की शुरुआत "उदाहरण के लिए ....." वाक्यांश से करता है।

iv) **क्रमबद्धता** - लेखक अपने विचारों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने के लिए या उसके विभिन्न पक्षों को क्रमबद्ध रूप से रखने के लिए "पहले", "दूसरे", "अंततः" आदि शब्दों का प्रयोग करता है। जब दो ही पक्ष रखे जाने हों तो कई बार "और" या "तथा" जैसे शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण के लिए पैरा 5 के निम्नलिखित अंश को देख सकते हैं।

हमारे संविधान ने भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया है। इसके दो अर्थ होते हैं। प्रथम, इसका अर्थ हुआ कि सरकार के लिए सभी धर्मों के नागरिक समान हैं। ..... द्वितीय, धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह भी है कि सभी धर्मों के लोगों को अपने धर्म के अनुसार, पूजा-अर्चना करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

उपर्युक्त वाक्यों में धर्मनिरपेक्षता के दो महत्वपूर्ण पक्षों को रखा गया है। इन दोनों पक्षों को क्रम से स्पष्ट करने के लिए ही लेखक ने "प्रथम" और "द्वितीय" शब्दों का प्रयोग करते हुए अलग-अलग वाक्य लिखें हैं।

v) **विपरीतता या अन्य कथन** - कई बार लेखक किसी बात के विरोधी पक्ष को उजागर करना चाहता है या बात का कोई अन्य पहलू रखना चाहता है जो पहले वाले पक्ष से भिन्न है तो वह "इसके विपरीत", "बल्कि" आदि पदों का प्रयोग करता है। जैसे :

"समाजवाद केवल लोगों के राजनीतिक जीवन में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी समानता की धारणा का विस्तार करता है।"

उपर्युक्त वाक्य में लेखक ने समाजवाद की अवधारणा में निहित "व्यापकत्व" को व्यक्त करने के लिए उक्त वाक्य को उपर्युक्त रूप में रखा है। इससे लेखक यह स्पष्ट करता है कि समाजवाद केवल "राजनीतिक जीवन" में समानता तक सीमित नहीं है। इसके लिए वह "बल्कि" द्वारा अपने मंतव्य को भिन्न रूप में व्यक्त करता है।

**अन्य उदाहरण :** धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार तक सीमित नहीं है, इसके विपरीत इसका अर्थ है राज्य को धर्म के हस्तक्षेप से मुक्त रखना।

vi) **समापन** - अपनी बात को समाप्त करते हुए लेखक जब निष्कर्ष रूप में कोई बात कहता है तो "प्रायः", "संक्षेप में", "निष्कर्ष रूप में", "अंत में", "इस प्रकार" आदि पदों का प्रयोग करता है ताकि पाठक को कथन का निष्कर्ष सूत्र रूप में स्पष्ट हो जाए। उदाहरणतः

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र की सफलता इस बात में निहित है कि हम सभी क्षेत्रों में समानता के आदर्श को कितना लागू कर पाते हैं।

**अन्य उदाहरण :** इस प्रकार, भारतीय लोकतंत्र विश्व का महान लोकतंत्र है।

विषय की विवेचना करते हुए लेखक उपर्युक्त वाक्यांशों या शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार करता है। दूसरे, विषय के व्यवस्थित विवेचन के लिए वह उसे उचित क्रम भी देता है। जैसे, सर्वप्रथम, वह अपनी अवधारणा को सूत्र रूप में रखेगा। फिर वह उसकी तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करेगा। उसके विभिन्न पक्षों को क्रम से प्रस्तुत करेगा। अपने कथन के समर्थन में जहाँ आवश्यक होगा उदाहरण देगा। और अंत में, अपने कथन का निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा।

**अभ्यास**

3. क) आगे भारत की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका पर १० वाक्य दिये गये हैं। इनका क्रम बदला हुआ है। इन्हें सही क्रम में रखें जिससे पूरा गद्यांश सही अर्थ दे सके। खानों में सिर्फ वाक्य संख्या लिखें।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | |

ख) इन वाक्यों को एक-दूसरे से जोड़ने वाले शब्दों को रेखांकित कीजिए जिनकी सहायता से आप क्रम को सही समझ पाये हैं।

1. भारत के प्रयत्नों का ही परिणाम था कि आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीसरी दुनिया की आवाज़ प्रबल हो उठी है।

2. इस दृष्टि से दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया की रंगभेद की नीति की निंदा सबसे पहले भारत ने की।

3. अंत में, यह भी कह सकते हैं कि भारत अब तीसरी दुनिया का नेतृत्व संभाले हुए है।

4. आइए देखें कि विश्व राजनीति में भारत की क्या भूमिका है। संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से भारत प्रजातिवाद, रंगभेद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्षरत है।

5. अफ्रीका में, नामीबिया के लिए स्वतंत्रता की अंतर्राष्ट्रीय मांग इसका उदाहरण है।

6. इन तीनों बुराइयों के विरुद्ध संग्राम में अफ्रीकी-एशियाई राष्ट्रों को भारत का पूरा समर्थन मिला हुआ है।

7. कुल मिलाकर कह सकते हैं कि विश्व में राजनीतिक समता लाने के लिए भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

8. तीसरी दुनिया को एकजुट करने के अतिरिक्त भारत उपनिवेशवाद के खिलाफ भी बराबर आवाज़ उठाता रहा है।

9. निंदा के साथ-साथ भारत ने तीसरी दुनिया के राष्ट्रों को प्रबल बनाने के प्रयत्न भी किये।

10. अफ्रीका में ही नहीं बल्कि दुनिया के अन्य क्षेत्रों में भी भारत उपनिवेशवाद की समाप्ति का समर्थक है।

## 8.4 व्याकरणिक विवेचन

### 8.4.1 "वि" उपसर्ग

इस पाठ में "विभिन्न", "विशेष", "विचित्र" जैसे कुछ शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों में "वि" उपसर्ग है। कुछ शब्दों के पूर्व "उपसर्ग" लगाने से नये शब्द बनते हैं।

वि + भिन्न = विभिन्न

वि + शेष = विशेष

वि + चित्र = विचित्र

उपसर्ग लगाने से मूल शब्द के अर्थ में निम्नलिखित परिवर्तन हो सकते हैं :

i) शब्द में विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। जैसे, विचित्र

ii) शब्द का विपरीत अर्थ दे सकता है। जैसे, विदेश, विजातीय

iii) शब्द के मूल अर्थ को सीमित अर्थ-क्षेत्र दे सकता है। जैसे, विज्ञान

iv) शब्द के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे, विनाश

**अभ्यास**

1. नीचे दिये गये शब्दों में "वि" उपसर्ग लगाकर अर्थ की भिन्नता बताइए।

   i) वाद .....

   ii) धर्म .....

   iii) पक्ष .....

   iv) हार .....

   v) शिष्ट .....

   vi) मुख .....

   vii) कल .....

   viii) षम .....

   ix) जन .....

## 8.4.2 विलोम शब्द

इस पाठ में कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके विपरीत अर्थ देने वाले शब्द भी हैं। जैसे, समानता और असमानता, अमीर और गरीब, धनवान और निर्धन, निम्न और उच्च। इन्हें विलोम शब्द कहते है क्योंकि ये शब्द विपरीत अर्थ देते हैं।

विलोम शब्द बनाने के लिए उपसर्गों का प्रयोग भी किया जाता है -

जैसे, "अ" उपसर्ग लगाकर - समान > असमान

संभव > असंभव

सचेत > अचेत

स्वर से आरंभ होने वाले शब्दों के पहले "अ" के स्थान पर "अन्" उपसर्ग लगता है। जैसे,

एक - अनेक

अर्थ - अनर्थ

आदर - अनादर

"वि" उपसर्ग लगाकर भी विलोम शब्द बनाए जाते हौ। जैसे, सम—विषम

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार 'वि', 'नि' आदि के बाद के व्यंजन 'स', 'ष' में परिवर्तित हो जाता है। इसी नियम के और दो शब्द दिये जा रहे हैं, जिनमें वर्तनी के स्तर पर "ष" का प्रयोग देखिए -

विषाद, निषिद्ध

नीचे कुछ विलोम शब्द और उनकी रचना बताई गई है।

| | | |
|---|---|---|
| स्वतंत्र (स्व + तंत्र) | — | परतंत्र (पर + तंत्र) |
| सापेक्ष (स + अपेक्ष) | — | निरपेक्ष (निः + अपेक्ष) |
| स्वाधीन (स्व + अधीन) | — | पराधीन (पर + अधीन) |
| धनी (धन + ई) | — | निर्धन (निः + धन) |
| बली (बल + ई) | — | निर्बल (निः + बल) |

5. नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द बताइए और उनकी रचना स्पष्ट कीजिए

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| i) | उपलब्ध ..... | | viii) | सहमत ..... | |
| ii) | अधिकार ..... | | ix) | नीति ..... | |
| iii) | उपयोग ..... | | x) | व्यवस्था ..... | |
| vi) | पक्ष ..... | | xi) | आवश्यक ..... | |
| v) | व्यय ..... | | xii) | बुराई ..... | |
| vi) | अभाव ..... | | xiii) | प्रवृत्ति ..... | |
| vii) | पूर्ण ..... | | xvi) | श्रेष्ठ ..... | |

## 8.4.3 संधि

इस पाठ के पहले पैरा में "सर्वोत्तम" शब्द का प्रयोग हुआ है। "सर्वोत्तम" शब्द दो शब्दों (सर्व + उत्तम) से मिलकर बना है। इन दोनों शब्दों के मिलने से शब्दों की रचना में अंतर आ

जाता है। अर्थात् शब्द के पहले खंड का अंत्याक्षर (अंतिम अक्षर) दूसरे खंड के आद्याक्षर (पहले अक्षर) से मिल गया है और दोनों के मेल से एक भिन्न अक्षर बन गया है। अक्षर के इस प्रकार के मेल को संधि कहते हैं। आगे तीन प्रकार की संधियों के उदाहरण देखिए :

**संधि के प्रकार**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मत + अधिकार | = | मताधिकार | अ + अ → आ |
| | स्व + इच्छा | = | स्वेच्छा | अ + इ → ए |
| | सूर्य + उदय | = | सूर्योदय | अ + उ → ओ |

इन उदाहरणों में अ+अ मिलकर आ, अ+इ मिलकर ए और अ+उ मिलकर ओ हुआ है। ये सब अक्षर स्वर हैं। इसलिए इनके मेल को **स्वर संधि** कहते हैं।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2. | वाक् + ईश | = | वागीश | क् + ई → गी |
| | उत् + चारण | = | उच्चारण | त् + चा → च्चा |
| | जगत् + नाथ | = | जगन्नाथ | त् + ना → न्ना |

इन उदाहरणों मे अंत्य व्यंजनों के साथ स्वर अथवा व्यंजन मिले हैं और उनके स्थान में भिन्न अक्षर हो गये हैं। इसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 3. | निः + अपेक्ष | = | निरपेक्ष | विसर्ग + अ → र |
| | निः + आशा | = | निराशा | विसर्ग + अ → रा |
| | दुः + उपयोग | = | दुरुपयोग | विसर्ग + उ → रु |
| | दुः + भाव | = | दुर्भाव | विसर्ग + भ → र्भ |

ऊपर के उदाहरणों में विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन मिले हैं और उनके स्थान पर भिन्न अक्षर आया है। विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल को **विसर्ग संधि** कहते हैं।

6. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| i) | धनाभाव ..... | v) | सदानंद ..... |
| ii) | रमेश ..... | vi) | निरादर ..... |
| iii) | उन्नयन ..... | vii) | दुर्मति ..... |
| vi) | दिग्गज ..... | viii) | प्रश्नोत्तर ..... |

## 8.4.4 समास

इस पाठ में "लोकतंत्र" शब्द का कई स्थलों पर प्रयोग हुआ है। "लोकतंत्र" भी दो शब्द "लोक "व "तंत्र" से मिलकर बना है। आपने देखा होगा कि "लोकतंत्र" में लोक और तंत्र के मिलने से दोनों के रूप में कोई अंतर नहीं आता। इसमें दोनों शब्दों के बीच के संबंध को व्यक्त करने वाले शब्द का लोप हो गया है। लोकतंत्र = लोक का तंत्र। लोकतंत्र में "का" लुप्त है। इस तरह बनने वाले शब्दों को सामासिक शब्द कहते हैं। अर्थात् जब दो या दो से अधिक शब्द अपने संबंधी शब्दों को छोड़कर एक साथ मिल जाते हैं, तब उनके मेल को समास और उनसे मिले हुए शब्दों को सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे,

दया + सागर = दयासागर = दया (का) सागर

स्व + तंत्र = स्वतंत्र = स्व (का) तंत्र

गृह + युद्ध = गृहयुद्ध = गृह* (में) युद्ध

धर्म + निरपेक्ष = धर्मनिरपेक्ष = धर्म (से) निरपेक्ष

स्त्री + पुरुष = स्त्री-पुरुष = स्त्री (और) पुरुष

*यहाँ गृह देश के भीतर का अर्थ देता है।

**अभ्यास**

7. नीचे लिखे पदों के सामासिक शब्द बनाइए।

   i) चंद्र के समान मुख वाली .....

   ii) माता और पिता .....

   iii) वर्षा का काल .....

   vi) कार्य में कुशल .....

   v) लंबे काल से .....

   vi) न्याय की दृष्टि से उचित .....

## 8.5 सारांश

इस इकाई में आपने "भारतीय लोकतंत्र" के विषय में अध्ययन किया है। राजनीति विज्ञान से संबंधित विषयों के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आपको हिन्दी में राजनीति विज्ञान विषय संबंधी लेखन से परिचित कराना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- लोकतंत्र और उसके वैचारिक आधार को परिभाषित कर सकते हैं।
- भारतीय लोकतंत्र की विशेषताओं को स्पष्ट कर सकते हैं।
- भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों की व्याख्या कर सकते हैं।
- पारिभाषिक शब्दों के अर्थ और उनकी सरल व्याख्या कर सकते हैं।
- विषय का सरल विवेचन कर सकते हैं।
- उपसर्ग, विलोम शब्द, संधि और समास को परिभाषित कर सकते हैं और इनके सही प्रयोग कर सकते हैं।

## 8.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सुदिप्त कविराज, **नागरिक और शासन**, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली - 110 016

## 8.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

**बोध प्रश्न**

1. i) सही ii) गलत iii) गलत vi) सही v) सही

3. क) ii) ख) ii)

4. क) ii) ख) i) ग) ii)

5. i) स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद

ii) सांप्रदायिकता, जातिप्रथा, आर्थिक वैषम्य, भाषायी द्वेष

iii) एक ऐसी शासन व्यवस्था जहाँ अल्पसंख्यक वर्ग के लोग बहुसंख्यक वर्ग के लोगों पर शासन करते हैं।

iv) एक ऐसी व्यवस्था जहाँ धर्म लोगों का निजी मामला होता है, लोगों को पूजा अर्चना की पूरी स्वतंत्रता होती है और राजनीतिक मामलों में धर्म का हस्तक्षेप नहीं होता।

**अभ्यास**

1. i) लोकतंत्र ii) समाजवाद iii) धर्मनिरपेक्ष

iv) लोकतंत्र v) सांप्रदायिकता vi) उपनिवेश

2. i) एक ही भाषा बोलने वाले लोगों का समुदाय।

ii) लोकतंत्र का वह स्वरूप जो भारत में है।

iii) दूसरे राष्ट्र को पराधीन (उपनिवेश) बनाकर किया जाने वाला शासन।

iv) लोगों में आय की लगभग बराबरी

3. क) वाक्यों का सही क्रम

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 6 | 2 | 9 | 1 | 8 | 5 | 10 | 7 | 3 |

ख) आइए देखें 6..इन तीनों 2. इस दृष्टि से 9. निंदा के साथ.साथ 1. भारत के प्रयत्नों 8. तीसरी दुनिया 5. नामीबिया के लिए स्वतंत्रता की अंतर्राष्ट्रीय माँग 10. अफ्रीका में ही नहीं 7. कुल मिलाकर 3. अंत में

4. i) विवाद - विचार-विमर्श vi) विमुख - हट जाना

ii) विधर्म - दूसरा धर्म vii) विकल - अशांत या बेचैन होना

iii) विपक्ष - दूसरा (विपरीत) पक्ष viii) विषम - असमान

vi) विहार - घूमना ix) विजन - जन से रहित

v) विशिष्ट - विशेष

5. i) अनुपलब्ध - अन् + उपलब्ध viii) असहमत - अ + सहमत

ii) अनधिकार - अन् + अधिकार ix) अनीति - अ + नीति

iii) अनुपयोग - अन् + उपयोग x) अव्यवस्था - अ + व्यवस्था

vi) विपक्ष - वि + पक्ष xi) अनावश्यक - अन् + आवश्यक

v) आय xii) अच्छाई

vi) भाव xiii) निवृत्ति - नि + वृत्ति

6. i) धन + अभाव
   ii) रमा + ईश
   iii) उत् + नयन
   vi) दिक् + गज
   v) सत् + आनंद
   vv) निः + आदर
   vii) दुः + मति
   viii) प्रश्न + उत्तर

7. i) चन्द्रमुखी
   ii) माता-पिता
   iii) वर्षाकाल
   vi) कार्यकुशल
   v) दीर्घकालीन
   vi) न्यायोचित